अध्याय

1

भूमिका

भूमिका

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता के अध्ययन से सम्बन्धित है। वास्तव मे मुस्लिम धर्म मे जाति की कोई सैद्धान्तिक अवधारणा नही है। नही किसी भी प्रकार की सामाजिक असमानता सम्बन्धी वैचारकीय ही है। बल्कि यह सामाजिक समानता पर आधारित एक धर्म है। परन्तु भारतीय सामाजिक हिन्दू व्यवस्था की जाति व्यवस्था मुस्लिम धर्म मे भी देखने को मिलती है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि मुस्लिम धर्म की जाति व्यवस्था मे हिन्दू धर्म मे अर्न्तनिहित जाति व्यवस्था की कठोरता नही है। हिन्दू धर्म मे जातिगत स्थानान्तरण सम्भव नही है। एक व्यक्ति अपनी जाति को छोड़कर अन्य जाति को अपना नही सकता है। जबकि मुस्लिम धर्म में ऐसा नही है। बल्कि व्यक्ति अपनी जाति को छोड़कर अन्य जाति को अपना सकता है। ताकि उसकी सामाजिक प्रस्थिति मे परिवर्तन हो सके।

वास्तव मे मुस्लिम समुदाय मे जाति व्यवस्था हिन्दू जाति व्यवस्था के सामाजिक सांस्कृतिक सम्पर्क का परिणाम है। इसलिए उनमे हिन्दूओ जैसी जातीय कठोरता नही है। बल्कि उनमे मुस्लिम धर्म की समानता है। यही कारण है कि मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता देखने को मिलती है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की विषयवस्तु यही है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे उन कारको के सन्दर्भ मे अध्ययन करने का प्रयास किया है जो मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता को अभिप्रेरित करते है। यहॉ यह भी उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि इस्लाम धर्म क्या है। इस्लाम धर्म के उदय से पूर्व कौन सी सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था थी जिसमे इस्लाम धर्म का उदय हुआ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे इसका महत्व इसलिए अधिक हो जाता है कि इस्लाम धर्म मे अर्न्तनिहित वैचारीकीय पृष्ठभूमि मे सामाजिक समानता सम्बन्धी अवधारणा समाहित है। इसी अवधारणा ने जातीय गतिशीलता को प्रोत्साहित किया है। इसलिए इस्लाम सम्बन्धी कुछ वैचारिकीय दृष्टिकोणों की संक्षेप मे चर्चा करना अपरिहार्य हो जाता है।

इस्लाम धर्मः—

इस्लाम अरबी भाषा के "सलम" शब्द से निकला है। "सलम" का अर्थ होता है हुक्म मानना। अर्थात आज्ञा का पालन करना। और इस्लाम का अर्थ है हुक्म मानने वाला— अर्थात आज्ञा का पालन करने वाला। इस्लाम का वास्तविक अर्थ है— खुदा के हुक्म पर गर्दन रखने वाला। इसको मानने वाले मुसलमान कहलाते है। मुसलमान शब्द मुसल्लम इमान का बिगड़ा हुआ स्वरुप है। मुसल्लम का अर्थ है पूरा और इमान का अर्थ है दीन या धर्म। अतएवं मुसलमान उन लोगो को कहते है जिसका दीन इस्लाम मे पूरा विश्वास है।

व्यापक अर्थो मे इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसमे पुरी निष्ठा के साथ व्यक्ति समर्पित है। यानि इस्लाम धर्म मे समर्पण की पूर्ण भावना अन्तर्निहित है। जिसका तात्पर्य इस्लाम धर्म के विरुद्ध कोई भी वैचारिकीय या सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन सम्भव नही है। मुझे लगता है कि इसीलिए यह धर्म कट्टरपंथियो के द्वारा समय—समय पर दुरुपयोग किया जा रहा है। अथवा इस्लाम को एक कठोर धर्म के रुप मे जनमानस मे प्रचारित या प्रसारित किया जाता रहा है। इस सन्दर्भ मे इससे अधिक व्याख्या करना उचित प्रतीत नही होता है। बल्कि यहा कहना अनुपयुक्त

नही होगा की अरब संस्कृति की प्रचलित कुरीतियों विश्वासो कुप्रथाओ आदि को समाप्त करने का प्रयास किया गया है। इन्ही को पुनः न अपनाने की कठोरता इसमे समाहित है। वरना इस्लाम धर्म समानता पर आधारित एक ऐसी सामाजिक वैचारिकीय है जिसमे सभी समान है। मैने प्रारम्भ मे ही उल्लेख किया है कि मुसल्लम इमान तब मुसलमान अर्थात इस धर्म के प्रति पूर्ण समर्थन और समर्पण की भावना अर्न्तनिहित है। यही कारण है कि मुसलमान धार्मिक समानता पर पूरा विश्वास करता है। कुरान मे लिखा है कि "तुम लोगो की यह सारी जमाअत केवल एक भाईचारा है।"[1] इस प्रकार इस्लाम धर्म पुर्णतया सामाजिक समानता पर आधारित एक धर्म है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे मुस्लिमो मे जातीय गतिशीलता इस दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक हो जाता है। यहाँ इस्लाम धर्म के उन परिस्थितिजनित सामाजिक सांस्कृतिक और राजनैतिक परिवेश का संक्षेप मे चर्चा करना आवश्यक हो जाता है।

इस्लाम धर्म के उदय से पूर्व अरब की सामाजिक–सांस्कृतिक और धार्मिक परिवेशः–

इस्लाम धर्म के उदय होने से पूर्व अरब वालो का धार्मिक विचार लगभग उसी प्रकार के जिस प्रकार के प्राचीन काल मे हिन्दूओ के थे। हिन्दूओ की भॉति वे भी मूर्तिपूजक थे। और अनेक देवी देवताओ मे विश्वास करते थे।

1–श्रीवास्तव एस. के. एल.– द कम्प्रेटिव स्टडी आफ मुस्लिम सोसाइटी फोर कास्ट स्पेशली 15, 169 टू 184 पृ.

उसी प्रकार इन लोगो के भी प्रत्येक कबीले का एक देवता होता था जो उसकी रक्षा करता था। अरब वालो मे अन्ध विश्वास भी कूट–कूट कर भरा हुआ था। और वे भूत प्रेत मे विश्वास रखते थे। उनकी धारणा थी की भूत प्रेत वृक्षो तथा पत्थरो मे निवास करते है। और मनुष्य को विभिन्न प्रकार के कष्ट देने की शक्ति रखते है। मक्का मे कॉबा इनका अत्यन्त पवित्र स्थान था जहॉ 360 मूर्तियों की पूजा हुआ करती थी। कॉबा मे एक काला पत्थर है जो बड़ा ही पुराना है। इन लोगो का विश्वास था कि इस पत्थर को ईश्वर ने आसमान से गिरा दिया था। अतएव वे लोग इसे बड़ा पवित्र मानते थे और इसके दर्शन तथा पूजा के लिए कॉबा जाया करते थे। यह पत्थर आज भी बड़े आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

इस्लाम धर्म के उदय से पूर्व अरब की सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था मे अनेको कुरीतियों कुप्रथाओ रीतिरीवाजो का प्रचलन था जो मानवीय दृष्टि से किसी भी प्रकार उपयुक्त नही था। इन सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था मे लड़कियों को जिन्दा गाड़ देने जैसी प्रथा प्रचलित थी। अरबवासी ऐय्यांश और मद्यपान के बुरी आदतो के शिकार थे। वास्तव मे एक ऐसी सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था थी जिसमें एक नवीन वैचारिकीय या धर्म का उदय होना स्वाभाविक था। ऐसी ही सामाजिक परिस्थितियो मे मोहम्मद साहब का प्रादुर्भाव हुआ। यहॉ यह स्पष्ट कर दे कि मोहम्मद साहब का सम्बन्ध कॉबा जैसे पवित्र स्थल के सुरक्षा या देखभाल मे संलग्न कुरैशी कबीले से था। यही कुरैश कालान्तर मे कुरैशी कहलाये। इसी कबीले मे मोहम्मद साहब का जन्म हुआ। मुझे ऐसा लगता है कि पवित्र कॉबा से सम्बन्धित परिवारिक पृष्ठभूमि की वैचारिकीय और अरब की सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था मे अर्न्तनिहित कुप्रथाओ आदि की पृष्ठभूमि ने मोहम्मद साहब की वैचारिकीय दृष्टिकोणो मे इस्लाम धर्म का विकसित होना स्वाभाविक था। यह एक सामाजिक वैचारिकीय थी। जिसके आधार पर एक नवीन सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था की नींव रखी गयी। यही कारण है कि इस्लाम धर्म पुर्णतया सामाजिक समानता की वैचारिकीय पर अधिष्ठित है। इस सामाजिक

समानता की विचार धारा ने ही जातीय गतिशीलता को प्रोत्साहित किया जो हिन्दू सामाजिक व्यवस्था से पुर्णतया भिन्न है।

मुहम्मद साहब और इस्लामः—

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि इस्लाम धर्म अरब की प्रचलित सामाजिक—सांस्कृतिक कुरीतियो और धार्मिक परिवेश के विरुद्ध एक वैचारिकीय है। इस्लाम धर्म समाज जनित अवधारणा है जिसका मूल आधार सामाजिक समानता है अर्थात यह अरब की सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक मूल्यो मे निहित सामाजिक विषमता और सामाजिक अन्याय को समाप्त करने का एक वैचारिकीय दृष्टिकोण है। यही कारण है कि इस्लाम धर्म मे सामाजिक समानता सम्बन्धी मूल्य और विश्वास प्रणालियों की एक सैद्धान्तिक अवधारणा है। कालक्रम मे इसने अनेको सामाजिक—सांस्कृतिक मूल्यो को परिवर्तित परिवेश मे अपना लिया है। फिर भी ये सामाजिक समानता की अवधारणा को अपने मूलरुप मे अपनाये हुए है। मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता इसका सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे हमारा उद्देश्य इस जातीय गतिशीलता के सन्दर्भ मे ही अध्ययन करना है।

मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई0 मे मक्का के एक साधारण परिवार मे हुआ था। ये बाल्यकाल से ही बड़े मननशील थे, वे बड़ा ही सरल जीवन व्यतीत करते थे। धीरे— धीरे एक ईश्वर तथा प्रार्थना मे उनका विश्वास बढ़ता गया परन्तु चालीस वर्ष की अवस्था तक मुहम्मद साहब के जीवन मे कोई विशेष घटना नही घटी। इसके बाद एक दिन उन्हे जिब्राइल फरिस्ता के दर्शन हुए जो उनके पास ईश्वर का पैगाम लेकर आया था। यह सन्देश था— "तुम अल्लाह का नाम लो जिसने सब वस्तुओ की रचना की है।"[2]

2— कुरान— 27 पारा— ताज पब्लिकेशन, दिल्ली

इसके बाद मुहम्मद साहब को प्रत्यक्ष रुप से ईश्वर के दर्शन हुए और यह सन्देश मिला– "अल्लाह के अतिरिक्त कोई दूसरा नही है और मुहम्मद साहब उसका पैगम्बर है।"[3]

इस प्रकार इस्लाम मूर्तिपूजा का विरोधी और एक ईश्वर (अल्लाह) मे विश्वास पर आधारित एक ऐसा धर्म है जिसमे सभी समान है।

आरम्भ मे उनके विचारो का स्वागत नही हुआ बल्कि उनका विरोध करना आरम्भ कर दिया। जिससे विवश होकर 620 ई0 मे उन्हे अपनी जन्मभूमि मक्का को छोड़ देना पड़ा। और वे मदीना चले गये। यही मुसलमानो का हिजरी सम्बत प्रारम्भ होता है। हिजरी अरबी के "हज्र" शब्द से निकला है। जिसका अर्थ जुदा या अलग हो जाना है। चुकि मुहम्मद साहब मक्का से अलग होकर मदीना चले गये। अतएव इस घटना को हिजरत कहते है। मदीना मे मुहम्मद साहब का बड़ा ही स्वागत हुआ और वहॉ पर वे नौ वर्ष तक रहे। उनके अनुयायियों की संख्या धीरे–धीरे बढती गयी। सन् 611 ई0 मे मोहम्मद साहब जन्मभूमि मक्का लौट आये और वां पर दूसरे वर्ष उनका परलोक वास गया।

इस्लाम धर्म का राजनीतिक स्वरुपः–

इस्लाम धर्म की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह रही है कि आरम्भ से ही यह धर्म राजनीति से सम्बन्धित रहा है। सैनिक संगठन से इसका अटूट सम्बन्ध रहा है। मुहम्मद साहब के जीवन काल मे ही इस धर्म को सैनिक तथा राजनैतिक स्वरुप प्राप्त हो गया था। जब 622 ई0 मे मुहम्मद साहब मक्का से भागकर मदीना गये तब वहा पर उन्होने अपने अनुयायियों की एक सेना संगठित की, और मक्का पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार उन्होने अपने सैन्य बल से मक्का मे सफलता प्राप्त की।

3– कुरान– 21 पारा– ताज पब्लिकेशन, दिल्ली

मुहम्मद साहब न केवल धर्म प्रधान स्वीकार कर लिए गये बल्कि वे राजनीति के भी प्रधान बन गये और उनके निर्णय सर्वमान्य हो गये। इस प्रकार मुहम्मद साहब के जीवन काल मे धर्म तथा राज्य के अध्यक्ष पद एक ही व्यक्ति मे संयुक्त हो गया था।

खलीफाओ का उत्कर्षः—

मोहम्मद साहब की मृत्यु के बाद इस्लाम का नेतृत्व खलीफाओ के हाथ आया उनमे अबुबक्र, उमर उस्मान आदि प्रमुख खलीफा थे। इनकी सेनाओ ने एशीया, अफ्रिका तथा यूरोप के अनेक देशो मे इस्लाम धर्म का प्रचार किया। खलीफा अरबी के "खलफ" शब्द से बना है जिसका अर्थ लायक बेटा अर्थात योग्य पुत्र से है। परन्तु खलीफा का अर्थ जॉनशीन या उत्तराधिकारी से है। मुहम्मद साहब की मृत्यु के उपरान्त जो उनके उत्तराधिकारी हुए वे लोग खलीफा कहलाये। खलीफा का प्रारम्भ मे चुनाव होता था परन्तु बाद मे यह पद आनुवंशिक हो गया।

मुहम्मद साहब के मरने के बाद "अबुवक्र" जो कुटुम्ब मे सबसे अधिक बुढ़े तथा मोहम्मद साहब के ससुर थे उनको प्रथम खलीफा चुन लिया गया। वे बड़े ही धर्म परायण व्यक्ति थे। उनके प्रयास से मेसोपोटामिया तथा सिरिया मे इस्लाम धर्म का प्रचार हो गया। अबुबक्र के मर जाने पर 634 ई0 मे उमर निर्विरोध चुन लिये गये। उन्होने इस्लाम धर्म के प्रचार मे जितनी सफलता प्राप्त की उतनी सम्भवतः अन्य किसी खलीफाओं ने नही प्राप्त की। उन्होने इस्लाम धर्म की अनुयायियो की एक विशाल तथा योग्य सेना संगठित की और साम्राज्य विस्तार तथा धर्म प्रचार का कार्य साथ–साथ आरम्भ कर दिया। उमर के बाद उस्मान खलीफा हुए परन्तु थोड़े ही दिन बाद उनकी विलास प्रियता के कारण हत्या कर दी गयी और उनके स्थान पर "अली" खलीफा चुन लिए गये। परन्तु कुछ लोगो ने इसका विरोध किया। इस प्रकार गृह युद्ध आरम्भ हो गया और

इस्लाम धर्म के प्रचार मे भी शिथिलता आ गयी। अन्त मे अली का वध कर दिया गया। अली के बाद उनका पुत्र हसन खलीफा चुन लिये गये। परन्तु उनमे यह पद ग्रहण करने की योग्यता व क्षमता न थी। अतएव उसने इस पद को त्याग दिया। सिरिया के गर्वनर "मुआविया" जो खलीफा उमर के वंश का था उसे खलीफा चून लिया गया। हसन ने "मुआविया" के पक्ष मे खलीफा का पद इस शर्त पर त्याग दिया की खलीफा का पद निर्वाचन होगा आनुवंशिकी नही। परन्तु खलीफा हो जाने पर "मुआविया" के मन मे कुभाव उत्पन्न हो गया और वह अपने वंश की जड़े जमाने मे लग गया। मुआविया लगभग 20 वर्ष तक खलीफा के पद पर रहा और इस बीच उसने अपने वंश की स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ बना ली। हसन के साथ जो वादा किया उसे वह तोड़ दिया और अपने पुत्र यजीद को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। इससे बहुत असंतोष उत्पन्न हुआ और इस असंतोष का नेतृत्व अली के पुत्र तथा हसन के भाई इमाम हुसैन ने ग्रहण किया। उन्होने अपने थोड़े से साथियो के साथ फरात नदी के पश्चिमी किनारे के मैदान मे उम्मैयद खलीफा की विशाल सेना का बड़ी वीरता और साहस के साथ सामना किया वे अपने साथियो के साथ तलवार के घाट उतार दिये गये और मुहर्रम महीने के "दसवी" तारिख को शहीद हो गये। जिस मैदान मे इमाम हुसैन ने अपने प्राणो की आहुति दी वह मैदान "कर्बला" के नाम से जाना जाता है।

भारत मे इस्लाम धर्मः—

भारत मे इस्लाम धर्म समय समय पर कई तरह आया व फैला। जैसे अरबवासियो के माध्यम से मोहम्मद बिन कासिम द्वारा सिन्ध पर अपना राज्य बनाने से इरानी शरणार्थियो और सुफी सन्तो के आने से। कई अरब व्यापारी जो इस्लाम को मानते थे भारत के पश्चिम तट पर व्यापार करने आते थे वहॉ के वन्दरगाहों मे वे छोटी—छोटी बस्तियां बनाकर बस गये। राजाओ ने उन्हे बसने मे मदद की। उन्हे अपने घर, गोदाम तथा मस्जिद बनाने के लिए जमीन दी। इन व्यापारियो के प्रभाव से

आस पास के कई लोग मुसलमान बने। जब भारत के लोगो ने इस्लाम धर्म अपनाया तब भी अपने कई पुराने रीतिरीवाजो और रस्मो को बनाये रखे। "अरब लोग संस्कृत शब्द सिन्धु को हिन्द बोलते थे जिससे हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान शब्दो का उद्भव हुआ।"[4] भारत के पश्चिम मे इस्लाम धर्म एक घटना के कारण आया। मोहम्मद विन कासिम ने जब सिन्ध को अपना राज्य बनाया तो उसके साथ कई अरब लोग सिन्ध और मुल्तान मे बस गये। जिसके कारण वहॉ लोगो को इस नये धर्म के बारे मे ज्ञान प्राप्त हुआ। भारत के उत्तरी हिस्सो मे इस्लाम धर्म की जानकारी इरानी शरणार्थियो द्वारा आयी। सन् 900 के लगभग इरान देश पर तुर्क कबीले हमले कर रहे थे। इन हमलो से बचने के लिए कई ईरानी लोग भारत आये, उनमे कई लोग कारीगर थे और कई लोग सन्त थे। कुछ सिपाही भी आये जो राजाओ की सेनाओ मे शामिल हो गये। ये ईरानी लोग मुसलमान थे इनके सम्पर्क मे आकर बहुत से लोगो को इस्लाम के बारे मे जानकारी मिली। सन 1190 के बाद तुर्क लोगो ने भी इस्लाम धर्म मानने लगे थें। तुर्को के साथ बडी संख्या मे इरानी अफगानी, खुरासानी लोग भी भारत आकर बस गये। भारत मे बहुसंख्यक हिन्दु समूह तथा अल्प संख्यक मुस्लिम समूह दोनो एक लम्बे समय से एक दूसरे के साथ रहते हुए अनेक पुर्वाग्रहो से ग्रस्त है। यह बात जितनी मुसलमानो के बारे मे लागू होती है उतनी ही हिन्दूओ के बारे मे लागू होती है। कुछ ऐसा ही संकेत एम0 एन0 राय ने दी है। उन्होने लिखा है संसार की कोई भी सभ्य जाति इस्लाम के इतिहास से अनभिज्ञ नही है। संसार की कोई भी जाति इस्लाम को उतनी घृणा से नही देखती है जितनी घृणा से हिन्दू देखते है।[5]

---

4 श्रीनेत्र पाण्डेय प्रोफेसर–भारत वर्ष का सम्पूर्ण इतिहास,पहला भाग,पृ0 309, लोक भारतीय प्रकाशन 15ए महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद

5 मानवेन्द्र नाथ राय– द हिस्टोरिकल रोल आफ इस्लाम पी 125

इस्लाम से हिन्दूओ की घृणा तब उत्पन्न हुई जब महमूद गजनवी ने इस देश मे आकर क्रुरता का व्यवहार किया और यहॉ के मन्दिरो को नष्ट करके अपने लिए दुर्नाम अर्जित किया। इस सिलसिले मे यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि भारत के किसी भी मुसलमान विद्वान ने मुसलमानी अत्याचार को उचित बताने अथवा उसकी भीषणता पर पर्दा डालने की कोशिश नही की है। प्रसिद्व इतिहासकार राजवली पाण्डेय ने लिखा है कि "आधुनिक मुसलमान लेखक डॉ0 हबीब महमूद के बारे मे लिखा है कि महमूद गजनवी की सेना से भरतीय मन्दिरो का घोर विध्वंस हुआ उसको किसी भी ईमानदार इतिहासकार को छुपाना नही चाहिए अपने धर्म से परिचित कोई भी मुसलमान उसका समर्थन नही करेगा।"[6]

हिन्दूओ और मुसलमानो मे परस्पर सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावः–

बहुसंख्यक हिन्दूओं और अल्पसंख्यक मुसलमानों के बीच कैसा सम्बन्ध रहा है। क्या वे एक दुसरे से बहुत दुर रहे है या निकट ? इस सम्बन्ध मे भी विद्वानो मे मतभेद है। डॉ0 ताराचन्द जैसे विद्वान ने माना है कि मुस्लिम संस्कृति का हिन्दू संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा।[7] दूसरी ओर डा0 घुरिये ने माना है कि दोनो संस्कृतियो का एक

---

(6) पाण्डेय राजवली–भारतीय इतिहास का परिचय चौठाम्बा विद्याभवन वाराणसी

(7) ताराचन्द डाक्टर– इन्फ्लुएन्स आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर

दूसरे पर कोई गहरा प्रभाव नही पड़ा। किन्तु कोई समाजशास्त्री या इतिहासकार इस बात से इनकार नही कर सकता की जब भी दो समूहो या संस्कृतियों के लोग लम्बे समय तक साथ–साथ रहते है तो अवश्य एक दूसरे को प्रभावित करते है।[8] इसमे कोई सन्देह नही की भारत मे हिन्दू तथा मुसलमान इन दोनो समूहो का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ा है। दोनो संस्कृतियो ने एक दूसरे को प्रभावित किया है। किन्तु यह भी सही है कि दोनो एकीकृत नही हो सके। इस्लाम और हिन्दुत्व के बीच निकट के सम्पर्क बारहवी शताब्दी के बाद प्रारम्भ हुए लेकिन दोनो समूह एक न हो सके। यद्यपि एकता के प्रयास किये गये जैसे मध्य युग मे एकता का एक आन्दोलन अकबर ने चलाया और आधुनिक युग मे दूसरा आन्दोलन महात्मा गॉधी ने चलाया किन्तु कोई भी आन्दोलन सफल नही हो सके। इस्लाम प्रभावित होने से डरता है क्योकि उसकी परम्परा के अनुसार संशोधित प्रभावित और सुधरा हुआ धर्म इस्लाम नही है। उधर हिन्दूत्व हमेशा इस बात का अभिमानी रहा है कि हिन्दू हिन्दुत्व के अन्दर चाहे पतित ही समझा जाय की जन्मना वह संसार के अन्य सभी धर्म के लोगो से श्रेष्ठ है। इस्लाम की यह कट्टरता की हमारा वही रुप ठीक है जिसे नबीं ने परिवर्तित किया था। और हिन्दुत्व का यह आग्रह की हमे धर्म के मामले मे किसी से कुछ सीखना ही नही है। ये दोनो बाते दिवार बनकर इस्लाम और हिन्दुत्व के बीच खडी रही। इस दिवार को अधिक मजबूत इतिहासकारो तथा राजनीतिज्ञो ने किया और स्वार्थवद्ध राजनीति मे कभी–कभी दोनो समूहो को एक दूसरे के निकट आकर समझने का मौका नही दिया। साथ ही इसके ठीक विपरीत लोगो मे एक दूसरे के मन मे डर और निराशा की भावना उत्पन्न करते रहे, ताकि उन्हे थोक मे वोट मिलते रहे।

---

(8) धुरिये जी0एस0 सोशल टेन्शन्स इन इण्डिया पापुलर प्रकाशन बम्बई 1968

चाहे देश की एकता, अखण्डता और सःअस्तीत्व को कितना भी चोट क्यो न पहुचे। हिन्दू और इस्लामी संस्कृतियों के साथ– साथ रहने और लम्बे समय से निकटवर्ती सःअस्तीत्व से दोनो एक दूसरे पर गहरे सुक्ष्म एवं दुरगामी प्रभाव पड़े।

हिन्दू संस्कृति का इस्लाम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने वाले डा0 ताराचन्द ने यहा तक सिद्ध करने का प्रयास किया है कि निम्बार्क, रामानुज, रामानन्द, बल्लभाचार्य और दक्षिण के अलवांर सन्त तथा वीर शैव सम्प्रदाय, ये सबके सब इस्लाम से प्रभावित हुए।[9] हिन्दुओ के वेश भूषा, व्यजंन और मनोरंजन का प्रसाधन के साधनो पर इस्लाम का प्रभाव आज भी दृष्टिगत होता है। मुस्लिम समाज और संस्कृति पर हिन्दूओ का व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस सम्बन्ध मे यासीन मोहम्मद ने लिखा है कि भारत मे ताजियों को गाड़ना और उन पर नाटकीय आक्रमण करना हिन्दूओ की रामलीला का इस्लामी अनुकरण है।[10] यासिन यह प्रतिपादित करने का प्रयास किया है कि सम्भवतः तत्कालिन मुस्लिम समाज मे राक्षस विवाह प्रचलित था जो की एक गैर इस्लामीक प्रथा थी। इसी प्रकार भाषा, धर्म, कला इत्यादि पर भी हिन्दूओ का प्रभाव पडा।

इस्लाम मे जाति व्यवस्था

(इस्लामी सामाजिक संरचना पर हिन्दू प्रभाव):–

भारतीय सामाजिक व्यवस्था मे जाति व्यवस्था असमानता और ऊँच नीच की भावना पर अधिष्ठित है। जाति व्यवस्था

---

(9) ताराचन्द डाक्टर– इन्फ्लुएन्स आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर

(10) यासीन मोहम्मद– सोसल हिस्ट्री आफ इस्लाम लखनऊ 1958 पी–197–9–15

असमान सामाजिक प्रस्थिति का परिचायक है। जाति व्यवस्था जनित सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य और आदर्श मानव–मानव मे विभेद स्थापित करते है। वास्तव मे जाति व्यवस्था असमान सामाजिक प्रस्थिति का बोध कराता है।

इस्लाम धर्म समानता पर आधारित है, इसमे सामाजिक विषमता का आधार मानव नही है। लेकिन भारतीय सामाजिक व्यवस्था मे अन्तर्निहित जाति व्यवस्था ने अपना स्थान बना लिया है। इनमे भी सामाजिक विषमता का आधार जाति सूचक व्यवस्था से इंगित किया जाता है। इसका मूल कारण भारतीय सामाजिक व्यवस्था मे अन्तर्निहित जाति व्यवस्था जनित सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्य ही है। मुसलमान जब भारत मे आये तब उनमे उदग्र वर्गीकरण या सामाजिक स्तरीकरण नही था ऊँच–नीच का भेदभाव नही था, जाति प्रथा नही थी। परन्तु भारतीय सम्पर्क मे आने के बाद उनमे एक प्रकार की जाति व्यवस्था ने ऊंच नीच के भेदभाव को जन्म दिया।

वास्तव मे इस्लाम धर्म के भारत मे आने से पुर्व अनेको धर्म की अपनी कोई वैचारिकी पृष्टभूमि सशक्त नही थी। यही कारण है कि वे हिन्दूओ मे लगभग विलिन होकर अपने अस्तीत्व को बचाये नही रख सके। इस्लाम धर्म की अपनी एक मजबूत धार्मिक विचार धाराएं थी। यही कारण है कि दो संस्कृतियो की वैचारिकी मे अन्तर्द्वन्द होना स्वाभाविक था। जो कालान्तर मे वैचारिकीय संघर्ष के रुप मे उभरता रहा। इस्लाम धर्म भारत मे अपने अस्तीत्व को बनाये रख सका। इसका तात्पर्य यह नही है की वे हिन्दू धर्म और संस्कृति से प्रभावित नही थे।

इस्लाम ने भी हिन्दुओ की संस्कृति और सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था मे अन्तर्निहित तत्वो को अपने आप मे आत्मसात किया। जाति प्रथा इससे अछुती नही रही है। डा0 अन्सारी उ0प्र0 की मुस्लिम जातियो को चार भागो मे बाटा है। अशरफ अर्थात "शरीफ" जो सबसे ऊँचे तबके के मुसलमान है। इसमे सैयद, शेख, मुगल, पठान गिने जाते है। दूसरे दर्जे पर मुस्लिम राजपूत आते है। तीसरे दर्जे पर वे जातियां है जो हिन्दू से

मुसलमान हुई है परन्तु मुसलमान होने के कारण पाक समझी जाती है। इन जातियों मे जुलाहा, दर्जी, नाई, कसाई, कुजड़ा, मिरासी, कुम्हार, मनिहार, धुनियां, फकीर, गद्दी, धोबी आदि गिने जाते है। चौथे दर्जे पर नापाक जातियां है जिनमें भंगी गिने जाते है। जो मुसलमान अपने को ऊंचा समझते है उनमे भी एक दूसरे से उपर नीचे के दर्जे के माने जाते है। उदाहरणार्थ सैयद, शेख की बेटी ले सकता है परन्तु शेख का सैयद की बेटी से विवाह वर्जित है।[11]

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि इस्लाम मे मौलिक रूप से जाति प्रथा नही थी, यह समानता पर आधारित था। जो लगभग एक वर्गीय सामाजिक संरचना थी। यह विदित है कि इस्लाम धर्म का उदय अरब मे सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था मे अर्न्तनिहित सामाजिक–सांस्कृतिक कुरीतियों और कुप्रथाओं के विरुद्ध थी। अगर यह कहा जाय की भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश मे इस्लाम धर्म को अनेको सामाजिक संस्थाओ और सांस्कृतिक मूल्यो मे परिवर्तन और स्थायीत्व आया तो अतिश्योक्ति नही होगी। भारतीय सामाजिक व्यवस्था मे अर्न्तनिहित जाति व्यवस्था की अवधारणा ने भी इस्लाम को प्रभावित किया। धर्मान्तरण की प्रक्रिया ने इसे अधिक बदल दिया। लेकिन हिन्दूओ मे जो जाति व्यवस्था सोपानात्मक रुप मे थी वह मुस्लिम धर्म मे भी प्रवेश कर गयी। वर्तमान सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश मे जाति व्यवस्था देखने को मिलती है।

यहॉ पर यह कहना सत्य है कि इस्लाम की अवधारणा वैचारिकीय, समानता और भातृत्व की भावना पर ही आधारित रही है। इसमे परिवर्तन सम्भव है। जबकि हिन्दू धर्म मे जाति व्यवस्था की कठोरता

---

(11) सिद्धान्त लकांर सत्यव्रत प्रो0 विद्या मार्तण्ड– भारतीय की जनजातियां तथा संस्थाए पी 697 प्रकाशन विजय कृष्णा लखनपाल एराड क0 विद्या विहार 4 बलवीर एवेन्यु देहरादून

इतनी प्रबल है कि आधुनिक परिवेश मे भी जातीय गतिशीलता अर्थात एक जाति से दूसरी जाति के जातिगत प्रस्थिति को ग्रहण करना सम्भव नही है। इस्लाम धर्म मे यह उदारवादी दृष्टिकोण से पाया जाता है। जिसमे एक मुसलमान अपनी जातिगत प्रस्थिति बदल सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य मुसलमानो मे होने वाले जातीय गतिशीलता का ही अध्ययन करना है।